Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2021, VOL- 8/65

सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा में विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापकों के विद्यालय अनुभवों का अध्ययन

केसर सिंह, Ph. D.

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग कॉलेज ऑफ़ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नौएडा.

Paper Received On: 21 JUNE 2021
Peer Reviewed On: 30 JUNE 2021
Published On: 1 JULY 2021

Abstract

प्रस्तुत शोध कार्य में सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा में विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापकों के विद्यालय अनुभवों का अध्ययन किया गया है। विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम से तात्पर्य अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापकों द्वारा विद्यालय में कराये जाने वाले शिक्षण से हैं। प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय एवं क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के कुल 430 छात्र अध्यापको का चयन उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्शन तकनीकी के द्वार किया गया हैं। शोध उपकरण के रूप में स्व निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। अध्ययन में संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक एवं मात्रात्मक पद्धति से किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण से सेवापूर्व अध्यापकों के अनुभवों का अध्ययन किया गया।

प्रमुख शब्दावली: *सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा, विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम, विद्यालय अनुभव*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

यदि गुणवत्तापरक शिक्षा की गहरी पड़ताल करें तो पायेगेंs कि आज के परिप्रेक्ष्य में ऐसे अध्यापकों की जरूरुरत है जो वर्तमान परिस्थितियों में उत्पन्न चनौतियों का सामना कर सकें तथा पेशेवर अध्यापकों के रूप में गुणवत्ता परक शिक्षा दे सकें । ऐसे अध्यापक बनाने के लिए अध्यापक का गुणवत्तापूर्ण होना आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार एकमात्र सच्चा अध्यापक वह है जो तुरंत स्तर के नीचे आ सकें और छात्र की आत्मा को अपनी आत्मा में स्थानांतरित कर सकें और छात्र की आंखों के माध्यम से देखें तथा अपने कानों के माध्यम से सुनें और अपने मन के माध्यम से समझें।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शिक्षा केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान करने की यांत्रिक क्रिया नहीं है और न ही अध्यापक सूचनाओं का प्रदाता हैं। अध्यापकों को ऐसी महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाना चाहिए जिनके द्वारा पाठ्यक्रम अमल में लाया जाता है। ऐसे संवेदनशील अध्यापक, विद्यार्थियों के साथ ज्ञान को मिल-जुलकर सृजित करते हैं **(अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2009)**। राधाकृष्णन आयोग ने कहा है कि पर्याप्त अनुभवी अध्यापकों की नियुक्ति प्रशिक्षण विद्यालयों में की जानी चाहिए। अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं में पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए और उसके अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर उसे अधिक उपयोगी बनाया जाना चाहिए। प्रशिक्षणार्थियों की परीक्षा में अभ्यास कार्य को वरीयता दी जानी चाहिए । सेवापूर्व अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय के पाठ्यक्रम ऐसे होने चाहिए कि समय की मांग और आवश्यकता के अनुसार आसानी से परिवर्तन लाया जा सके। पाठ्यक्रम में सामाजिक और मानवीय आवश्यकताओं को महत्व दिया जाना चाहिए **(वर्मा, 2011)** । शिक्षार्थी की गुणवत्ता और उपलब्धि की सीमा मुख्य रूप से अध्यापक की क्षमता, संवेदनशीलता और अध्यापक प्रेरणा द्वारा निर्धारित की जाती है। अध्यापक समाज निर्माण की महत्वपूर्ण कड़ी है । किसी भी राष्ट्र के समृद्ध होने के लिए वहां की शिक्षा व्यवस्था को अच्छा होना आवश्यक हैं साथ ही राष्ट्र का समृद्ध होना इस बात पर भी निर्भर करता है कि इस शिक्षा के वाहक अध्यापक कैसे हैं ? किसी भी राष्ट्र को उसकी शिक्षा के सार्वभौमिकरण के सपने को साकार करने के लिए अच्छे अध्यापक तैयार करने अनिवार्य हैं **(कांडपाल, 2015)**।

अध्यापकों को इस प्रकार की आजादी होनी चाहिए कि वे नए-नए प्रयोग कर सकें और सम्प्रेषण की उपयुक्त विधियों तथा समुदाय की समस्याओं व क्षमताओं के अनुरूप नये उपाय निकाल सकें **(गुप्ता व ममता, 2008)**। कोठारी कमीशन ने अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम में गुणात्मक सुधार करने के लिए प्रशिक्षण विद्यालयों के पाठ्यक्रमों की शिक्षा और विषय सामग्री को परिवर्तित करने के साथ-साथ इसकी समयावधि को भी बढ़ाकर दो वर्ष करने तथा शिक्षा के एकीकृत पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का सुझाव दिया **(जौहर व पाठक, 2012)**। अध्यापक की तैयारी शिक्षण के कार्यों की प्रकृति पर निर्भर करती है, जिसके लिए उनको तैयार किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में कई अध्यापक शिक्षा के प्रतिमानों का विकास हुआ जिनमे से कुछ अध्यापक शिक्षा के प्रतिमान निम्नलिखित हैं- एलोरिडा स्टेट विश्वविद्यालय का प्रतिमान (सोवार्ड, 1968) फेज-1, जॉर्जिया प्रतिमान (जॉनसन, सेरन, स्लेफेर 1968), द टोलेडो प्रतिमान (Dickson 1968), द पिट्सबर्ग प्रतिमान (साउथ वर्थ 1968), द टीचर कॉलेज प्रतिमान (ज्यास 1968), द सायरेक्यूस प्रतिमान (हॉग 1969), टीचर्स फॉर रियल वर्ल्ड (स्मिथ 1969), स्टैनफोर्ड प्रतिमान (मई 1969), मिशीगन स्टेट प्रतिमान (हॉस्टल 1969), द विस्कोसिन प्रतिमान (वेरा डी वाल्ट 1969), द नॉर्थ वेस्ट रीजनल लैबोरेटरी प्रतिमान (शैलोक 1968), द मास्सचेस्ट्स प्रतिमान (एलन एवं कपूर 1968 के प्रयोग सिद्धांत को स्वीकार

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किया)। अध्यापक शिक्षा के इन प्रतिमानों अथवा प्रारूपों का उद्देश्य शिक्षण में दक्ष एवं सक्षम अध्यापक तैयार करना एवं उनमें अध्यापक के गुणों का विकास करना है **(शर्मा व चतुर्वेदी, 2011)।** अध्यापक शिक्षा पर चट्टोपाध्याय समिति रिपोर्ट (1983-85) ने कहा है कि लगभग सभी शिक्षण महाविद्यालय और प्रशिक्षण संस्थानों में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था है वह वर्तमान आवश्यकता के अनुरूप व्यवस्था अपर्याप्त है। यशपाल समिति (1993) ने कहा कि अध्यापकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से विद्यालय में अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है । अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों की विषयवस्तु इस प्रकार से पुनर्निधारित की जानी चाहिए कि विद्यालय शिक्षा की बदलती अवश्यकताओं के संदर्भ में प्रासंगिकता बनी रहे। इन कार्यक्रमों में छात्राध्यापकों में स्व-शिक्षण और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता के विकास पर अधिक से अधिक जोर दिया जाना चाहिए ।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा (2009) में तीन व्यापक पाठ्यचर्या क्षेत्र सम्मलित करने की बात कही गयी है जिसमे से क्षेत्र अनुभव एक महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या क्षेत्र हैं इस पाठ्यचर्या क्षेत्र में भी तीन घटक हैं जिसमे से एक विद्यालय अभ्यास शिक्षण । अध्यापक शिक्षा को हमारे देश में शुरू हुए लगभग सौ साल से अधिक हो गये हैं। सन 1850 में विद्यालय अध्यापकों के लिए अध्यापक प्रशिक्षण अध्ययन का एक अभिन्न हिस्सा था। चूकि विद्यालय प्रशिक्षण अध्यापक प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं इसलिए इसकी तरफ ध्यान देना नितान्त आवश्यक हैं । प्रस्तुत शोध में छात्राध्यापकों के विद्यालय प्रशिक्षण के अनुभवों का अध्ययन किया गया हैं जिससे विद्यालय प्रशिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों को आने वाली समस्यओं का पता लगाया जा सकें ।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध निम्नलिखित उद्देश्य को केंद्र में रखते हुए किया गया है-

1. विभिन्न अध्यापक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्राध्यापकों के विद्यालय प्रशिक्षण के दौरान विद्यालय अनुभवों का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में अंतर्गत शोधार्थी द्वारा वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है ।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में भारत में स्थित सभी सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा संस्थानों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। प्रस्तुत शोध में विभिन्न प्रकार के संस्थानों यथा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय को सम्मिलित किया गया है । क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के रूप में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल एवं अजमेर का चयन किया गया। केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में महात्मा गांधी अन्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार और डॉ.हरि सिंह गौड़

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वि. वि. सागर, म.प्र. तथा राज्य विश्वविद्यालय के रूप में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर को लिया गया । इन संस्थानों का चयन सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन प्रविधि से किया गया हैं । बी.एड.- दो वर्षीय व बी.एड.-एम.एड. एकीकृत पाठ्यक्रम के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर (राजस्थान), म. गां.अ.हि.वि.वि., वर्धा (महाराष्ट्र), देवी अहिल्या वि. वि., इंदौर (म.प्र.) तथा बी.ए.-बी.एड. तथा बी.एससी.-बी.एड. कार्यक्रम के लिए दो क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल तथा दो केन्द्रीय विश्वविद्यालयों- दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार और डॉ.हरि सिंह गौड़ वि. सागर, म.प्र. केन्द्रीय विश्वविद्यालयों का चयन सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन प्रविधि से किया गया । प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 430 छात्राध्यापकों को सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन प्रविधि से चुना गया। जिनमें दो वर्षीय बी.एड. के 150 छात्राध्यापक, बी.ए.- बी.एड. और बी.एस-सी.-बी.एड. के 280 छात्राध्यापक को सम्मिलित किया गया। शोध में न्यादर्श का विवरण तालिका सं. 1.0 में दिया गया है-

तालिका संख्या: 1.0

पाठ्यक्रम	**संस्थान**	**छात्राध्यापक संख्या**	**कुल योग**
बी.एड.- दो वर्षीय बी.एड.-एम.एड. एकीकृत	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर (राजस्थान)	50	150
	म.गां.अ.हि.वि.वि., वर्धा (महाराष्ट्र)	50	
	देवी अहिल्या वि. वि., इंदौर (म.प्र.)	50	
बी.ए. बी.एड./ बी.एस-सी. बी.एड.	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर (राजस्थान)	70	280
	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल (म.प्र.)	70	
	दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय,गया (बिहार)	70	
	डॉ.हरि सिंह गौड़ वि.वि., सागर (म.प्र.)	70	
योग		150+280	430

शोध उपकरण

प्रदत्त संकलन करने के लिए स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नवाली का उपयोग किया गया। शोध में प्रयुक्त उपकरण शोधकर्ता द्वारा तैयार किए गए और वैधता स्थापित करने के लिए विभिन्न विशेषज्ञों से उपकरण की समीक्षा करवाई गई। विशेषज्ञों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के बाद उनके सुझावों की मदद से उपकरण को अंतिम रूप दिया गया।

आंकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों का विश्लेषण मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों विधियों का प्रयोग करके किया गया। शोध में 430 छात्राध्यापकों से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संग्रहण किया गया।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रश्नावली द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति और प्रतिशत के माध्यम से विश्लेषण किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या-2.0: विद्यालय प्रशिक्षण (Internship)

एकांश 1 अध्यापक शिक्षण संस्थान द्वारा छात्राध्यापकों के लिए विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम कितने दिनों तक संचालित किया गया					
क्र.सं.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**
आवृत्ति	70	79	25	63	193
प्रतिशत	16.28	18.37	5.82	14.65	44.88
एकांश 2 छात्राध्यापकों के लिए विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम कितने दिनों का होना चाहिए					
क्र.सं.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**
आवृत्ति	64	88	32	78	168
प्रतिशत	14.88	20.47	7.44	18.14	39.07
एकांश 03 विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम किस प्रकार आयोजित किया गया					
क्र.सं.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**
आवृत्ति	66	53	35	31	245
प्रतिशत	15.34	12.33	8.14	7.21	56.98
एकांश 04 अवलोकन के दौरान क्या-क्या कार्य किया				**हाँ (%)**	**नहीं (%)**
a.	कक्षा अवलोकन			417 (96.98)	13 (3.02)
b.	अन्य विद्यालय गतिविधियों का अवलोकन			378 (87.90)	52 (12.10)
c.	पाठ सहगामी क्रियाओं का आयोजन व प्रबंधन			365 (84.89)	65 (15.11)
d.	चिन्तनशील दैनंदिनी का लेखन			316 (73.49)	114 (26.51)
एकांश 05 विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम (Internship) कितनी अवधि के लिए संचालित किया गया					
क्र.सं.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**
आवृत्ति	122	196	29	37	46
प्रतिशत	28.37	45.59	6.74	8.60	10.70
एकांश 06 विद्यालय अभ्यास शिक्षण(Internship) कार्यक्रम कितनी अवधि के लिये संचालित किया जाना चाहिए					
क्र.सं.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**
आवृत्ति	130	128	52	78	42
प्रतिशत	30.23	29.77	12.09	18.1	9.77
एकांश 07 विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान आपने क्या- क्या कार्य किया				हाँ (%)	नहीं (%)

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

a.	रोजाना एक या दो पाठ योजनाओं का शिक्षण	416 (96.74)	14 (3.26)
b.	चिंतनशील डायरी/ जर्नल / पोर्टफोलियो तैयार करना	324 (75.34)	106 (24.66)
c.	अन्य छात्राध्यापकोंकी पाठ योजनाओं का अवलोकन एवं मूल्यांकन	394 (91.62)	36 (8.38)
d.	क्रियात्मक अनुसन्धान (Action Research)	274 (63.72)	156 (36.28)
e.	केस अध्ययन (Case Study)	288 (66.98)	142 (33.02)
f.	सामुदायिक कार्य	363 (84.41)	67 (15.59)
g.	विद्यालय अध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन	347 (80.70)	83 (19.30)
h.	पाठ योजना एवं इकाई योजना तैयार करना	403 (93.72)	27 (6.28)
i.	प्रतिनिधि अध्यापक (Substitute teacher) के रूप में शिक्षण	376 (87.44)	54 (13.99)
j.	प्रश्न पत्र तथा अन्य मूल्यांकन उपकरण बनाना	352 (81.87)	78 (18.13)
k.	उपलब्धि परीक्षण,निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test) तैयार करना और उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)	322 (74.88)	108 (25.12)
l.	चुनिन्दा विषय वस्तु पर टर्म पेपर तैयार करना	249 (57.90)	181 (42.10)
m.	विभिन्न कार्यक्रमों (सांस्कृतिक,क्विज,वाद-विवाद,निबंध लेखन आदि) का आयोजन	378 (87.90)	52 (12.)
n.	पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण	354 (82.32)	76 (17.68)

एकांश 08 क्रियात्मक अनुसन्धान करने से विद्यालय की किसी समस्या का समाधान हुआ

क्र.सं.	**विकल्प**	**प्रतिक्रिया**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	290	67.44
2.	नहीं	140	32.56

एकांश 09 केस अध्ययन (Case Study) के माध्यम से विद्यार्थियों की समस्या का निदान सही प्रकार कर सकें

क्र.सं.	**विकल्प**	**प्रतिक्रिया**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	291	67.68
2.	नहीं	139	32.32

एकांश 10 विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल कितनी पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया

क्र.सं.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	6
आवृत्ति	113	209	19	10	25	54
प्रतिशत	26.28	48.61	4.42	2.32	5.81	12.56

एकांश 11 अभ्यास शिक्षण के दौरान एक विद्यालय में कितने छात्र अध्यापक थे

क्र.सं.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**
आवृत्ति	137	61	129	21	82
प्रतिशत	31.87	14.18	30	4.88	19.07

एकांश 12 अभ्यास शिक्षण के दौरान आप विद्यालय में कितने समय तक रहते थे

क्र.सं.	**1**	**2**	**3**

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आवृत्ति	12	130	288
प्रतिशत	2.80	30.23	66.97
एकांश 13 विद्यालय प्रशिक्षण के बाद छात्राध्यापकोंकी शिक्षण क्षमता में सुधार हुआ			
क्र.सं.	**विकल्प**	**प्रतिक्रिया**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	402	93.49
2.	नहीं	28	6.51
एकांश 14 अभ्यास शिक्षण के समय विद्यालय में क्या-क्या समस्याएँ आई		**हाँ (%)**	**नहीं (%)**
a.	विद्यालय अध्यापकों ने सहयोग नहीं किया	141 (32.80)	289 (67.20)
b.	कम समय के लिए विद्यालय में शिक्षण के लिए गये थे, इसलिए छात्र गंभीरता से नहीं लेते थे।	166 (38.60)	264 (61.40)
c.	विद्यालय में सामान्य अवश्यकताओं जैसे बिजली, पानी, कम्प्यूटर, लैब, प्रोजेक्टर आदि की कमी थी	228 (53.02)	202 (46.98)
d.	कोई अन्य- अभ्यास शिक्षण के लिए चुने गये विद्यालय अध्यापक शिक्षा संस्थानों से बहुत दूर थे ।	276 (76.63)	
एकांश 15 किस प्रकार के विद्यालय में अभ्यास शिक्षण (Internship) किया			
क्र.सं.	**1.**	**2.**	**3.**
आवृत्ति	303	80	47
प्रतिशत	70.47	18.60	10.93
एकांश 16 अभ्यास शिक्षण को किस प्रकार प्रभावी बनाया जा सकता हैं		**हाँ (%)**	**नहीं (%)**
a.	सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों में शिक्षण का अवसर मिलना चाहिए	408 (94.89)	22 (5.11)
b.	अच्छे प्रशिक्षित अध्यापकों की देख-रेख में अभ्यास शिक्षण किया जाना चाहिए	421 (97.90)	09 (2.10)
c.	जिस विद्यालय में अभ्यास शिक्षण के लिए भेजा जा रहा उसमें मुलभूत सुविधाए होनी चाहिए	404 (93.96)	26 (6.04)
d.	अभ्यास शिक्षण का समय विद्यालय के एक पूरे सत्र के लिए होना चाहिए।	306 (71.17)	124 (28.83)
e.	विद्यालय की आवश्यकता के अनुसार अभ्यास शिक्षण के लिए आवश्यक तैयारी अध्यापक शिक्षण संस्थान में सही प्रकार करनी चाहिए	412 (95.81)	18 (4.19)
f.	विद्यालय के विषय अध्यापक द्वारा भी कक्षाओं में छात्राध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जाना चाहिए।	406 (94.41)	24(5.59)
g.	कोई अन्य- शिक्षण सहायक सामग्रीका उपयोग अनिवार्य होना चाहिए ।	384 (89.30)	
	प्रत्येक विषय में आई. सी. टी. आधारित शिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।	346 (80.46)	

एकांश 01 के अनुसार अध्यापक शिक्षण संस्थान द्वारा छात्राध्यापकों के लिए विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम के संचालित होने के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 70 (16.28 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम एक सप्ताह तक संचालित किया गया, 79(18.37 प्रतिशत)

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

छात्राध्यापकों ने कहा कि दो सप्ताह अवधि तक विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम संचालित किया गया, 25 (5.82 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम तीन सप्ताह तक संचालित किया गया, 63(14.65 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम चार सप्ताह तक संचालित किया गया जबकि 193(44.88 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम चार सप्ताह से अधिक दिनों तक संचालित किया गया ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों ने बताया कि अध्यापक शिक्षण संस्थान द्वारा विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम चार या चार से अधिक सप्ताह तक संचालित किया गया जबकि एक चौथाई से अधिक छात्राध्यापकों ने कहा कि अध्यापक शिक्षण संस्थान द्वारा विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम एक से दो सप्ताह अवधि का करा गया । बहुत कम छात्राध्यापकों ने जानकारी दी कि उन्हेंने विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम तीन सप्ताह अवधि का किया।

एकांश 02 के अनुसार छात्राध्यापकों के लिए विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम की अवधि के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 64 (14.88 प्रतिशत) ने मत दिया कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम एक सप्ताह का होना चाहिए, 88 (20.47 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम की अवधि दो सप्ताह होना चाहिए, 32 (7.44 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम की अवधि तीन सप्ताह होना चाहिए, 78(18.14 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने वक्तव्य दिया कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम की अवधि चार सप्ताह का होना चाहिए और 168(39.07 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम चार सप्ताह से अधिक दिनों का होना चाहिए ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों मानते हैं कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम चार सप्ताह या अधिक अवधि का होना चाहिए। जबकि एक चौथाई से अधिक छात्राध्यापकों का मानना हैं कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम एक से दो सप्ताह अवधि तक संचालित किया जाना चाहिए।

एकांश 03 के अनुसार विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम के आयोजन की विधि के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 119 (27.87 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने व्यक्तय दिया कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम सप्ताह में एक से दो दिन आयोजित किया गया, 66 (15.35 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने बताया कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम सप्ताह में तीन से चार दिन कराया गया जबकि 245 (56.98 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने प्रतिकिया दी कि विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम लगातार किया गया।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों को उनके संस्थान ने विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम लगातार कराया । एक चौथाई छात्राध्यापकों को उनके संस्थान ने विद्यालय

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अवलोकन कार्यक्रम सप्ताह में एक से दो दिन आयोजित कराया जबकि बहुत कम ऐसे छात्राध्यापक भी थे जिनके यहाँ विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम सप्ताह में तीन से चार दिन कराया गया ।

एकांश 04 (a), (b), (c) और (d) के अनुसार विद्यालय अवलोकन के दौरान छात्राध्यापकों के कार्यों के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 417 (96.98) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन के दौरान उन्होंने कक्षाओं का अवलोकन किया जबकि 13 (3.02 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन के दौरान उन्होंने कक्षाओं का अवलोकन नहीं किया । 430 छात्राध्यापकों में से 378 (87.90 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन के दौरान उन्होंने कक्षाओं के अवलोकन के अलावा अन्य विद्यालय गतिविधियों का अवलोकन किया जबकि 52 (12.10 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन के दौरान कक्षाओं का अवलोकन के अलावा अन्य विद्यालय गतिविधियों का अवलोकन नहीं किया गया । 430 छात्राध्यापकों में से 365 (84.89) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन के दौरान उन्होंने पाठ सहगामी क्रियाओं का आयोजन व प्रबंधन किया जबकि 65 (15.11प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन के दौरान उनके द्वारा पाठ सहगामी क्रियाओं का आयोजन व प्रबंधन नहीं किया गया । 430 छात्राध्यापकों में से 316 (73.49 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अवलोकन के समय चिन्तनशील दैनंदिनी का लेखन किया जबकि 114 (26.51प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि चिन्तनशील दैनंदिनी का लेखन नहीं किया गया ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों ने विद्यालय अवलोकन के दौरान कक्षाओं का अवलोकन, विद्यालय में कक्षाओं के अवलोकन के अलावा अन्य विद्यालय गतिविधियों का अवलोकन, विद्यालय में पाठ सहगामी क्रियाओं का आयोजन व प्रबंधन तथा चिन्तनशील दैनंदिनी का लेखन किया । एक चौथाई छात्राध्यापकों ने चिन्तनशील दैनंदिनी का लेखन नहीं किया। कुछ छात्राध्यापकों ने विद्यालय अवलोकन के दौरान अन्य विद्यालय गतिविधियों का अवलोकन तथा विद्यालय में पाठ सहगामी क्रियाओं का आयोजन व प्रबंधन नहीं किया जबकि बहुत ही कम छात्राध्यापक ऐसे भी थे जिन्होंने विद्यालय अवलोकन के दौरान कक्षाओं का अवलोकन नहीं किया।

एकांश 05 के अनुसार विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम (Internship) की अवधि के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 122 (28.37 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम 14 सप्ताह अवधि के लिए संचालित किया, 196 (45.59 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम 16 सप्ताह अवधि के लिए संचालित किया, 66 (15.34 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने बताया कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम 18 से 20 सप्ताह अवधि के लिए संचालित किया गया, 46 (10.70) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम 14 सप्ताह अवधि से कम के लिए संचालित किया ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों को विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम (Internship) 14 से 16 सप्ताह अवधि का कराया गया । कुछ छात्राध्यापकों के संस्थानों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम (Internship) 18 सप्ताह अवधि के लिए संचालित किया जबकि बहुत कम छात्राध्यापकों को विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम (Internship) 20 सप्ताह अवधि का कराया गया ।

एकांश 06 के अनुसार विद्यालय अभ्यास शिक्षण (Internship) कार्यक्रम की अवधि के लिये सुझाव के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 130 (30.23 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण (Internship) कार्यक्रम 14 सप्ताह की अवधि के लिए संचालित किया जाना चाहिए, 128 (29.77 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम 16 सप्ताह की अवधि के लिए संचालित किया जाना चाहिए, 52 (12.09 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने मत दिया कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम 18 सप्ताह अवधि के लिए संचालित किया जाना चाहिए, 78 (18.14 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम 20 सप्ताह अवधि के लिए संचालित किया जाना चाहिए जबकि 42 (9.77 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम एक साल (एक सत्र) की अवधि के लिये संचालित होना चाहिए ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों का माना है कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण(Internship) कार्यक्रम को 14 से 16 सप्ताह की अवधि के लिये संचालित किया जाना चाहिए। एक चौथाई से अधिक छात्राध्यापकों का माना हैं कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण(Internship) कार्यक्रम 18 से 20 सप्ताह की अवधि का होना चाहिए जबकि बहुत कम छात्राध्यापक मत रखते हैं कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण(Internship) कार्यक्रम पूरे एक साल (एक सत्र) तक संचालित किया जाना चाहिए।

एकांश 07 (a), (b), (c), (d), (e), (f), (g), (h), (i) (j), (k), (l), (m) और (n) के अनुसार विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापकों के कार्यों के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 416 (96.74 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय में रोजाना एक या दो पाठ योजनाओं का शिक्षण किया जबकि 14 (3.26 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि उन्होंने विद्यालय में रोजाना एक या दो पाठ योजनाओं का शिक्षण नहीं किया। 324 (75.34 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय में चिंतनशील डायरी/ जर्नल / पोर्टफोलियो लिखी जबकि 106 (24.66 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय में चिंतनशील डायरी/ जर्नल / पोर्टफोलियो नहीं लिखी। 394 (91.62 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय में अन्य छात्राध्यापकों की पाठ योजनाओं का अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जबकि 36 (8.38 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अन्य छात्राध्यापकों की पाठ योजनाओं का अवलोकन एवं मूल्यांकन नहीं किया। 274 (63.72 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान क्रियात्मक अनुसन्धान किया

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जबकि 156 (36.27 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय में क्रियात्मक अनुसन्धान नहीं किया । 288 (66.98 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान केस अध्ययन आयोजित किया जबकि 142 (33.02) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान केस अध्ययन नहीं किया । 363 (84.41 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान सामुदायिक कार्य किया जबकि 67 (15.59 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान सामुदायिक कार्य नहीं किया। 347 (80.10 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय अध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन किया जबकि 83 (19.30 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय अध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन नहीं किया 403 (93.72 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान पाठ योजना एवं इकाई योजना तैयार की गई जबकि 27 (6.28) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान पाठ योजना एवं इकाई योजना तैयार नहीं की गई । 376 (87.44) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिनिधि अध्यापकों (Substitute teacher) के रूप में शिक्षण किया जबकि 54 (13.99) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिनिधि अध्यापक(Substitute teacher) के रूप में शिक्षण नहीं किया । 352 (81.87 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रश्न पत्र तथा अन्य मूल्यांकन उपकरण बनाये जबकि 78 (18.13 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रश्नपत्र तथा अन्य मूल्यांकन उपकरण नहीं बनाये। 322 (74.08 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान उपलब्धि परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test) का निर्माण और उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) किया जबकि 108 (25.12 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान उपलब्धि परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test) तैयार करना और उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) नहीं किया गया । 249 (57.90 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान चुनिन्दा विषय वस्तु पर टर्म पेपर तैयार किये जबकि 181 (42.09 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान चुनिन्दा विषय वस्तु पर टर्म पेपर तैयार नहीं किये। 378 (87.90 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों (सांस्कृतिक, क्विज,वाद-विवाद, निबंध लेखन आदि) का आयोजन किया जबकि 52 (12.10 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान उन्होंने विभिन्न कार्यक्रमों (सांस्कृतिक, क्विज, वाद-विवाद, निबंध लेखन आदि) का आयोजन नहीं किया। । 354 (82.32 प्रतिशत)

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

छात्राध्यापकों ने कहा कि उन्होंने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण किया जबकि 76 (17.68 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण नहीं किया।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय में रोजाना एक या दो पाठ योजनाओं का शिक्षण, विद्यालय में चिंतनशील डायरी/ जर्नल / पोर्टफोलियो लिखना, विद्यालय में अन्य छात्राध्यापकों की पाठ योजनाओं का अवलोकन एवं मूल्यांकन, क्रियात्मक अनुसन्धान केस अध्ययन, सामुदायिक कार्य, विद्यालय अध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन, पाठ योजना एवं इकाई योजना तैयार करना, प्रतिनिधि अध्यापक (Substitute teacher) के रूप में शिक्षण, प्रश्नपत्र तथा अन्य मूल्यांकन उपकरण बनाना, उपलब्धि परीक्षण एवं निदानात्मक परीक्षण(Diagnostic Test) तथा उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching), विभिन्न कार्यक्रमों (सांस्कृतिक,क्विज,वाद-विवाद,निबंध लेखन आदि) का आयोजन, पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण कार्य किया । आधे से अधिक छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान चुनिन्दा विषय वस्तु पर टर्म पेपर तैयार किये जबकि आधे से कम छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान चुनिन्दा विषय वस्तु पर टर्म पेपर तैयार नहीं किये । एक चौथाई या इससे अधिक छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय में चिंतनशील डायरी/ जर्नल / पोर्टफोलियो, विद्यालय में अन्य छात्राध्यापकों की पाठ योजनाओं का अवलोकन एवं मूल्यांकन, क्रियात्मक अनुसन्धान, केस अध्ययन, उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching), विभिन्न कार्यक्रमों (सांस्कृतिक,क्विज,वाद-विवाद,निबंध लेखन आदि) का आयोजन तथा चुनिन्दा विषय वस्तु पर टर्म पेपर तैयार करना कार्य नहीं किये। कुछ छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान रोजाना एक या दो पाठ योजनाओं का शिक्षण, सामुदायिक कार्य किया, विद्यालय अध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन, पाठ योजना एवं इकाई योजना तैयार करना, प्रतिनिधि अध्यापक(Substitute teacher) के रूप में शिक्षण, प्रश्नपत्र तथा अन्य मूल्यांकन उपकरण बनाना, विभिन्न कार्यक्रमों (सांस्कृतिक,क्विज,वाद-विवाद,निबंध लेखन आदि) का आयोजन तथा पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण किया नहीं किया।

एकांश 08 के अनुसार छात्राध्यापकों द्वारा क्रियात्मक अनुसन्धान के माध्यम से विद्यालय की समस्या के समाधान के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 290 (67.44 प्रतिशत) छात्राध्यापकों का मानना था कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान क्रियात्मक अनुसन्धान करने से विद्यालय समस्या का समाधान हुआ जबकि 140 (32.56 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि क्रियात्मक अनुसन्धान करने से विद्यालय की किसी भी समस्या का समाधान नहीं हुआ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि आधे से अधिक छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान क्रियात्मक अनुसन्धान के द्वारा विद्यालय की समस्याओं का समाधान किया । एक चौथाई से अधिक छात्राध्यापकों द्वारा विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान क्रियात्मक अनुसन्धान के द्वारा विद्यालय की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया ।

एकांश 09 के अनुसार छात्राध्यापकों द्वारा केस अध्ययन (Case Study) के माध्यम से विद्यार्थियों की समस्या का निदान करने के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 291 (67.68 प्रतिशत) छात्राध्यापकों का मत हैं कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान उन्होंने केस अध्ययन (Case Study) के माध्यम से विद्यार्थियों की समस्याओं का निदान सही तरीके से किया जबकि 139 (32.32 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि उनके द्वारा केस अध्ययन (Case Study) के माध्यम से विद्यार्थियों की समस्याओं का निदान सही तरीके से नहीं हो पाया ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि आधे से अधिक छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान केस अध्ययन (Case Study) के माध्यम से विद्यार्थियों की समस्याओं का निदान सही प्रकार किया । एक चौथाई से अधिक छात्राध्यापकों द्वारा विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान केस अध्ययन (Case Study)के माध्यम से विद्यार्थियों की समस्या का निदान सही प्रकार नहीं किया गया ।

एकांश 10 के अनुसार विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल पाठ योजनाओं के शिक्षण के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 113 (26.28 प्रतिशत) ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 40 से कम पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया, 209 (48.61 प्रतिशत) ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 40 से 50 पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया, 19(4.42 प्रतिशत) ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 51 से 60 पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया, 10 (2.32) ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 61 से 70 पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया, 25 (5.81 प्रतिशत) ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 71 से 80 पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया जबकि 54 (12.56 प्रतिशत) ने कहा कि विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान उनके द्वारा कुल 80 से अधिक पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों द्वारा विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 50 या कम पाठ योजनाओं का शिक्षण किया गया। बहुत कम छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 50 से 80 पाठ योजनाओं का शिक्षण किया जबकि कुछ छात्राध्यापकों ने विद्यालय अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 80 से अधिक पाठ योजनाओं का शिक्षण किया।

एकांश 11 के अनुसार अभ्यास शिक्षण के दौरान एक विद्यालय में कितने छात्राध्यापक थे के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 137 (31.87 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के दौरान एक विद्यालय में 10 से कम छात्र अध्यापक थे, 61 (14.18 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के दौरान एक विद्यालय में 10 छात्र अध्यापक थे, 129 (30 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के दौरान एक विद्यालय में 10 से अधिक छात्र अध्यापक थे, 21 (4.88 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के दौरान एक विद्यालय में 20 छात्र अध्यापक थे, 82 (19.07 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के दौरान एक विद्यालय में 20 से अधिक छात्र अध्यापक थे।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि आधे से कम विद्यालय में अभ्यास शिक्षण के दौरान दस या दस से कम छात्राध्यापक शिक्षण अभ्यास कार्य के लिए जाते थे जबकि एक तिहाई विद्यालयों में अभ्यास शिक्षण के दौरान दस से बीस तक छात्राध्यापक शिक्षण अभ्यास करते थे। कुछ ऐसे भी विद्यालयों दृष्टिगत हुए जहाँ 20 से अधिक छात्राध्यापकों ने शिक्षण अभ्यास कार्य किया ।

एकांश 12 के अनुसार अभ्यास शिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों के विद्यालय में रहने के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 12 (2.80 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यालय में केवल अपनी पाठ योजनाओं को पढाने तक रहते थे, 130 (30.23 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय के आधे समय तक रहते थे, 288 (66.97 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि पूरे दिन रहते थे।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्र अध्यापक विद्यालय में अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम के दौरान पूरे दिन विद्यालय में रहते थे जबकि एक चौथाई से अधिक छात्राध्यापक अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यालय के आधे समय तक रहते थे। बहुत कम ऐसे भी छात्राध्यापक थे जो अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यालय में केवल अपनी पाठ योजनाओं को पढ़ने तक रुकते थे।

एकांश13 के अनुसार विद्यालय प्रशिक्षण के बाद छात्राध्यापकों की शिक्षण क्षमता में सुधार के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 402 (93.49 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय प्रशिक्षण के बाद छात्राध्यापकों की शिक्षण क्षमता में सुधार हुआ जबकि 28 (6.51 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि विद्यालय प्रशिक्षण के बाद छात्राध्यापकों की शिक्षण क्षमता में सुधार नहीं हुआ ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि विद्यालय प्रशिक्षण के बाद अधिकतर छात्राध्यापकों की शिक्षण क्षमता में सुधार हुआ। कुछ ऐसे भी छात्राध्यापक दृष्टिगत हुए जिनकी शिक्षण क्षमता में विद्यालय प्रशिक्षण के बाद सुधार नहीं हुआ।

एकांश 14 (a) अभ्यास शिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों को विद्यालय में समस्याओं के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 141 (32.80 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के समय विद्यालय में विद्यालय

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्यापकों ने सहयोग नहीं किया जबकि 289 (67.20 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के समय विद्यालय में विद्यालय अध्यापकों ने सहयोग किया ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों के सामने यह समस्या नहीं आती कि विद्यालय अध्यापक सहयोग नहीं करते है जबकि कुछ छात्राध्यापकों के सामने यह समस्या आती है कि विद्यालय अध्यापक सहयोग नहीं करते है।

एकांश 14 (b) अभ्यास शिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों को विद्यालय में समस्याओं के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 166 (38.60 प्रतिशत) ने कहा कि क्योकि छात्र अध्यापक कम समय के लिए विद्यालय में शिक्षण के लिए गये थे, इसलिए छात्र गंभीरता से नहीं लेते थे जबकि 264 (61.40 प्रतिशत) ने कहा कि कम समय के लिए विद्यालय में शिक्षण के लिए जाने के बावजूद छात्र उन्हें गम्भीरता से नहीं लेते थे ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि छात्राध्यापकों के सामने यह समस्या नहीं आती कि विद्यालय के छात्र गंभीरतापूर्वक नहीं लेते है जबकि कुछ छात्राध्यापकों के सामने यह समस्या आती है कि उन्हें विद्यालय के छात्र गंभीरतापूर्वक नहीं लेते है ।

एकांश 14 (c) अभ्यास शिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों को विद्यालय में समस्याओं के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 228 (53.02 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के लिए चुने गये विद्यालय में सामान्य अवश्यकताओं जैसे बिजली, पानी, कम्प्यूटर, लैब, प्रोजेक्टर आदि की कमी थी जबकि 202 (46.98 प्रतिशत) ने कहा कि इन विद्यालय में सामान्य अवश्यकताओं जैसे बिजली, पानी, कम्प्यूटर, लैब, प्रोजेक्टर आदि की कोई कमी नहीं थी ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आधे छात्राध्यापकों के सामने यह समस्या आती है कि विद्यालयों में सामान्य आवश्यकता जैसे बिजली, पानी, कम्प्यूटर, लैब, प्रोजेक्टर आदि की कमी थी। जबकि कुछ छात्राध्यापकों के सामने यह समस्या नहीं आती है कि विद्यालयों में सामान्य अवश्यकताओं जैसे बिजली, पानी, कम्प्यूटर, लैब, प्रोजेक्टर आदि की कमी नहीं थी।

एकांश 14 (d) के अनुसार अभ्यास शिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों को विद्यालय में समस्याओं के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 276 (76.63 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के लिए चुने गये विद्यालय अध्यापक शिक्षा संस्थानों से बहुत दूर थे ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राध्यापकों के सामने यह समस्या आती है कि अभ्यास विद्यालय अध्यापक शिक्षा संस्थानों से बहुत दूर रहते है ।

एकांश 15 के अनुसार किस प्रकार के विद्यालय में अभ्यास शिक्षण (Internship) किया गया के संदर्भ में 430 छात्राध्यापकों में से 303 (70.47 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण सरकारी विद्यालय में

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किया, 80(18.60 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण गैर सरकारी विद्यालय में किया तथा 47(10.93 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण दोनों प्रकार के विद्यालय में किया गया।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राध्यापकों ने अभ्यास शिक्षण सरकारी विद्यालयों में किया । कुछ छात्राध्यापकों द्वारा अभ्यास शिक्षण कार्य गैर सरकारी विद्यालयों में किया गया जबकि बहुत कम छात्राध्यापकों द्वारा अभ्यास शिक्षण सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों में किया गया।

एकांश 16 (a), (b), (c), (d), (e), (f) तथा (g) के अनुसार अभ्यास शिक्षण को प्रभावी बनाये जाने के संदर्भ में सुझाव देते हुए 430 छात्राध्यापकों में से 408 (94.89 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालय में शिक्षण का अवसर मिलना चाहिए, 421 (97.90 प्रतिशत) ने कहा कि अभ्यास शिक्षण अच्छे प्रशिक्षित अध्यापकों की देख-रेख में किया जाना चाहिए, 404 (93.95 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि जिस विद्यालय में अभ्यास शिक्षण के लिए भेजा जा रहा है उसमें मुलभूत सुविधाए होनी चाहिए, 306 (71.16 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण का समय विद्यालय के एक पूरे सत्र के लिए होना तथा 406 (94.41 प्रतिशत) छात्राध्यापकों ने कहा कि अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यालय के विषय अध्यापकों द्वारा भी कक्षाओं में छात्राध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकतर छात्राध्यापकों का मत है कि सभी छात्राध्यापकों को सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों में शिक्षण के अवसर मिलने चाहिए, अच्छे प्रशिक्षित अध्यापकों की देख-रेख में अभ्यास शिक्षण किया जाना चाहिए, जिस विद्यालय में अभ्यास शिक्षण के लिए भेजा जा रहा हो उसमें मुलभूत सुविधाए होनी चाहिए तथा अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यालय के विषय अध्यापकों द्वारा भी कक्षाओं में छात्राध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

एकांश 15 (g) के अनुसार अभ्यास शिक्षण को प्रभावी बनाये जाने के संदर्भ में सुझाव देते हुए 430 छात्राध्यापकों में 384 (89.30) छात्राध्यापकों ने मत दिया कि अभ्यास शिक्षण के दौरान शिक्षण सहायक सामग्रीका उपयोग अनिवार्य होना चाहिए तथा 346 (80.46) छात्राध्यापकों ने कहा कि प्रत्येक विषय में आई. सी. टी. आधारित शिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि अधिकांश छात्राध्यापकों अभ्यास शिक्षण के दौरान शिक्षण सहायक सामग्रीके उपयोग तथा प्रत्येक विषय में आई. सी. टी. आधारित शिक्षण अनिवार्य करने के पक्ष में थे।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ पर निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किये जा सकते है-

कुछ सुझाव निम्नलिखित है

- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा सुझाए गए सभी कार्यक्रमों को सभी विद्यालय शिक्षा संस्थानों में संचालित किये जाना चाहिए।
- अभ्यास शिक्षण पूर्व उन्मुखीकरण कार्यक्रम कराया जाना चाहिए जिसमें शिक्षण संबंधी विभिन्न उपयोगी सूचनाओं से छात्र अध्यापकों को अवगत कराया जा सकें।
- वर्तमान विद्यालय आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण संस्थाओं में छात्र अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न तकनीकों में उन्हें दक्ष किया जाना चाहिए।
- अभ्यास शिक्षण के लिए आवश्यक कौशलों की कार्यशाला अभ्यास शिक्षण पूर्व ही करा लेनी चाहिए।
- छात्र अध्यापकों को विद्यालय में दिए गए उत्तरदायित्व के बारे में संस्थान में अच्छे से परिचित कराया जाना चाहिए (जैसे चिंतनशील डायरी लेखन, क्रियात्मक अनुसंधान, केस अध्ययन आदि) जिससे छात्र अध्यापक इन उत्तरदायित्व का निर्वहन ठीक प्रकार कर सकें।
- छात्र अध्यापकों के अभ्यास शिक्षण में जाने से पहले विद्यालय के अध्यापकों तथा प्रशिक्षण संस्थानों के वरिष्ठ छात्राध्यापकों से अंतः क्रिया कराई जानी चाहिए ।
- छात्र अध्यापकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यालय में आने वाली समस्याओं से अवगत कराया जाना चाहिए ।
- छात्र अध्यापकों को अभ्यास शिक्षण के लिए सरकारी और गैर सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों में शिक्षण का अनुभव दिया जाना चाहिए ।
- छात्र अध्यापकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक दोनों स्तरों पर अभ्यास शिक्षण करया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

अग्रवाल, एस. तथा चंदेल, एन. पी. (2009). अनुदानित व गैर-अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन. परिप्रेक्ष्य, अंक 3, 53-66.

अज़ीम, एम. (2011). प्रोब्लम्स ऑफ़ प्रोस्पेक्टिव टीचर्स ड्यूरिंग टीचिंग प्रैक्टिस. अकेडमिक रिसर्च इंटरनेशनल, 1(2), 308- 316. http://www.journals.savap.org.pk से पुनः प्राप्त

घिया, ए. (2012). दि स्टडी ऑफ़ डाइमेंशन्स ऑफ़ फीडबैक गिवेन ड्यूरिंग प्रैक्टिस ऑफ़ टीचिंग एंड परसेप्शनस ऑफ़ स्टूडेंट टीचर्स टुवर्ड्स इट इन टीचर एजुकेशन इंस्टिट्यूशन. (अप्रकाशित पी-एच.डी. शोध प्रबंध). शिक्षा संकाय, वनस्थली विश्वविद्यालय, राजस्थान.

गुप्ता, एम. पी. तथा ममता, (2008). भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ. आगरा: साहित्य प्रकशन. 222-223.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जौहर, बी. पी. एवं पाठक, पी. डी. (2012). भारतीय शिक्षा का इतिहास. आगरा: आगरा पब्लिकेशन 2012. पृष्ठ: 340-342.

कांडपाल, कै.सी. (2015). प्रवाह. देहरादून: अजीम प्रेम जी फाउंडेशन उत्तराखंड. https://azimpremjifoundation.org/foundation-publications/4627#block-menu-menu-publication-tab

*कुर्तुल्दू और ओज़कान (2018). प्री-सर्विस इंग्लिश लैंग्वेज टीचर रिफ्लेक्शनस ऑन पियर एसेसमेंट इन माइक्रोटीचिंग सैसन्स ऑफ ए मैथडोलॉजी कोर्स, उसक यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस ईयर:xi/ इशू दिसम्बर 2018 पृष्ठ 276-284 https://www.researchgate.net/publication/331558311_*

नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन. (2009). नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर्स एजुकेशन. नई दिल्ली: एनसीटीई http://www.ncteindia.org/regulation2014/english/Notification.pdf से पुनः प्राप्ति

पाटिल, एल. एस. तथा काम्बले, वी. के. (2013). अ स्टडी ऑफ़ दि प्रोब्लम्स व्हिच फेस बाई दि कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन इन दि प्रैक्टिस टीचिंग प्रोग्राम, इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, 3(10), 1-3, http://www.isrj.net से पुनः प्राप्ति

रंजन, आर. (2013). अ स्टडी ऑफ़ प्रैक्टिस टीचिंग प्रोग्राम: अ ट्रांजीशनल फेज फॉर स्टूडेंट टीचर्स. वौइस ऑफ़ रिसर्च, 1(4), 24-28. http://www.voiceofresearch.org/doc/mar-2013/mar-2013_5.pdf से पुनः प्राप्त

राज, आर. (1991). माध्यमिक अध्यापक शिक्षा संस्थानों में छात्र शिक्षण कार्यक्रम के संगठन और प्रशासन, वौइस ऑफ़ रिसर्च, 1(4), 24-28.

राय, डी. (2017). दो वर्षीय अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम: एक अध्ययन (प्रकशित) पी-एच.डी. शोध शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

शर्मा, आर. ए. एवं चतुर्वेदी, एस. (2011). अध्यापक शिक्षा. मेरठ: इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृष्ठ: 115-116.

सिंह, आर. तथा गुप्ता, डी.के. (2010). उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की कक्षा शिक्षण दक्षता का अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा, अंक 4, 102-110.

सिंह एवं साहू पी.के.(2014). उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मूल्यांकन. परिप्रेक्ष्य, 2, पृष्ठ 1-18.

श्रीनिवास, क. (2015). ए स्टडी ऑन प्रैक्टिस टीचिंग प्रोग्राम इन टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस ऑफ उस्मानिया यूनिवर्सिटी. (प्रकशित पी-एच.डी. शोध). सेंटर ऑफ़ एडवांस स्टडी इन एजुकेशन, फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी, दि एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ोदा, इंडिया.

सिंह, एस. (2007). सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा भाषा छात्र अध्यापको में शैक्षिक दक्षता के विकास का अध्ययन. (अप्रकाशित पी-एच.डी. शोध प्रबंध). बुंदेलखंड वि. वि., झाँसी.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies